COURSE OUTCOMES
SEMESTER - V
पंचम सेमिस्टर - तृतीय वर्ष
हिन्दी साहित्य संगम

इस सेमिस्टर के अंतर्गत, हिन्दी साहित्य संगम हिन्दी भाषआ के विविध रूप, हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं का परिचय और जनसंचार के माध्यम पाठ्य पुस्तक में संकलित है। जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों में शौक्षणिक ज्ञान तकनीकि ज्ञान का विकास कराना है।

UNIT-I

1) **राज भाषा** : इस पाठ में राज भाषा उस भाषा को कहते है जिसमें किसी देश का सरकारी कामकाज होता है। हिंदी को संविधान परिषद ने 14 सितंबर 1949 को राज भाषा की मान्यता प्रदान की है।

2) **राष्ट्र भाषा** : इस पाठ में राष्ट्र भाषा वह भाषा जिसे राष्ट्र की अधिकतर जनता समझ सके। जो संपूर्ण राष्ट्र की प्रशासनिक, सामाजिक तथा शैक्षणिक कार्यों में प्रमुख रूप से व्यवहार में लाई जा सके।

3) **संपर्क भाषा** : संपर्क भाषा को अंग्रेजी में लिंक लैंग्वेज कहते हैं। इस प्रकार संपर्क भाषा वह है जो अलग-अलग भाषाओ को बोलने वालों को जोडती।

4) **प्रयोजन मूलक हिन्दी** : जिसका उपयोग किसी विशिष्ट कार्य के लिए किया जाए। यह भाषा प्रशासन व्यवस्था और तकनीकी क्षेत्र में विकसित होकर क्षेत्र विशेष आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। 20 वी सदी में विज्ञान तथा टेकनोलॉजी के बढते प्रभाव के कारण प्रयोजनमूलक हिन्दी की आवश्यकता महसूस हुई।

5) **विश्व में हिन्दी का महत्व** : इस पाठ में हिन्दी अपनी सहज स्वाभाविक प्रवृत्ति ने इसे पूरे विश्व में फैला दिया है। आज विश्व के 140 से अधिक देशों में हिन्दी का अध्ययन - अध्ययापन होना हिन्दी के महत्व को दर्शाता है।

UNIT-II - **हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं का परिचय**

1) **कविता** : मानव समाजिक प्राणिी है । इस सृष्टि में मानव ही एक ऐसा जीव है जिसे वाणी का वरदान प्राप्त हुआ है । इस वाणी के माध्यम से वह न केवल अपने विचारों, भावों और अनुभवों को दूसरे तक पहुँचासकता है, कविता साहित्य की वह विधा है जिस में किसी कथ्य या मनोभव कलात्मक रूप के द्वारा अभिव्यक्ति किया जाता है ।

2) **कहानी** : कहानी हिन्दी साहित्य की एक अत्यंत लोक प्रिय विधा के रूप में स्वीकृति हो चुकी है । इस मानव जीवन और मानव चित्रण के किसी एक पहलू पर या उसमें घटित किसी एक घटना पर प्रकाश डालने के लिए कहानी लिखी जाती है । इस मनुष्य के किसी एक अंग या पथ मात्र को दिखाना है ।

3) **उपन्यास** : हिन्दी साहित्य की एक अत्यंत लोक प्रिय विधा है । जिस में मानव-जीवन की विविध विषमताओं औक समस्याओं को चित्रित करने का तिना अवसर उपन्यास में है उतना अन्यत्र नहीं ।

4) **नाटक** : इस में मानव जीवन के सात्विक भावों का प्रदर्शन । इस का संबंध नृत्य एवं अभिनय से जोड़ा जाता है । नाटक में जीवन की विभिन्न अवस्थाओं का अनुकरण होता है। नाटक रंग मंच पर अभिनी होने कारण यह दृश्य भी है तथा श्रव्य भी है ।

5) **एकांकी** : एकांकी एक अंक का दृश्य काव्य है जिस में एक ही कथा और कुछ ही पात्र होते है । उसमें एक विशेष उद्देश्य क्की अभिव्यक्ति करते हुए केवल एक ही प्रभाव की पूर्ण सृष्टि की जाती है ।

6) **निबंध** : निबंध वह लेख है जिसमें किसी गहन विषय पर विस्तारपूर्वक और पंडित्यपूर्ण ढंग से विचार किया जाता है ।

7) **आत्मकथा** : आत्मकथा लिखने की शर्त है ईमानदारी से के पक्ष में खड़ा होना और अपनी सफलता असफलताओं का निर्ममता पूर्वक पोस्टमार्टेम करना है ।

8) **<u>संस्मरण</u>** : स्मृति के आधार पर किसी विषय पर अथवा किसी व्यक्ति पर लिखित आलेख संस्मरण कहलाता है ।

9) **<u>रेखाचित्र</u>** : रेखा चित्र गद्य साहित्य की आधुनिक विधा है । इस विधा में लेखक रेखा चित्र के माध्यम से शब्दों का ढांचा तैयार करता है । लेखक किसी सत्य घटन की चित्रात्मक भाषा में वर्णन करता है । इस में शब्द चित्रों का प्रयोग आवश्यक है ।

10) **<u>व्यंग्य</u>** : व्यंग्य साहित्य की एक विधा है जिसमें उपहास, माजक (लुफ्फ) और इसी क्रम में आलोचना का प्रभाव रहता है । व्यंग्य को मुहावरे में व्यंग्यबाण कहा गया है ।

<u>UNIT-III</u> - <u>जन संचार के माध्यम</u>

1) **<u>जन संचार का अर्थ</u>** : जब संचार की प्रक्रिया सामूहिक पैमाने पर व्यापक स्तर होती है, तब वह जनसंचार कहलाता है । इसकी आवश्यकता आदिकालीन संस्कृति से लेकर वर्तमान वैशिबिक व्यवस्था तक व्याप्त है ।

2) **<u>जनसंचार का महत्व</u>** : सभी जन संचार माध्यम विभिन्न रूप से समाज के लिए महत्वपूर्ण होते है । यह मानव सभ्यता के विकास में संचार की महत्वपूर्ण भूमिका रही है ।

3) **<u>जनसंचार की प्रमुख विशेषताए</u>** : जनसंचार द्वारा समाज की बौद्धिक संपदा का हस्तांतरण संभव होता है । संचार माध्यमों के क्रांतिकारी विकास ने दुनिया को गाँव में बदल दिया है।

4) **<u>जनसंचार के प्रकार</u>** : जनसंचार के मध्यमों में इलेकट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया दोनो ही आते है । इसके अभाव से व्यक्ति इस विश्व से कट जाता है ।

5) **<u>जनसंचार के माध्यमों में लोक कलाएँ</u>** : संसार में अनगिनत लोक कलाएँ है जैसे लोक नृत्य, लोक संगीत, लोक, नाटक, लोक चित्रकला आदि । लोक गीतों द्वारा संस्कृति, देश भक्ति, रीति और नीति का बोध होता है । लोक गीत जन सामान्य को आकर्षित करते है।

COURSE OUTCOMES
SEMESTER - VI
हिन्दी साहित्य संगम

इस सेमिस्टर के अंतर्गत, हिन्दी साहित्य संगम अनुवाद से एक भाषा से दूसरी भाषा में हम कैसे प्रवेश करसकते है । इस का ज्ञान विद्यार्थियों में विकास होगा । पत्रकारिता से समाज को कितना लाभ होगा इसे भी विद्यार्थी जानेंगे । हिन्दी साहित्य में स्त्रीवादी साहित्य, दलित साहित्य, आदिवासी साहित्य एवं अल्पसंख्या साहित्य है । इस वर्गों को भी सामाजिक न्याय मिले इन्हें भी मुख्य धारा में लाया जाए । समाज में परिवर्तन हो, इस बात के प्रति विद्यार्थियों के मन में अभिरूचि जागृत करने का प्रयास किया गया है ।

UNIT-I

1) **अनुवाद के सिद्धांत** : अनुवाद के लिए अंग्रेजी में, ट्रांसलेशन शब्द का प्रयोग होता है ।

2) **अनुवाद शब्द की व्युत्पत्ति** : वद् धातु मे घञ् प्रत्यय लगने से वाद शब्द बनता है । वद का अर्थ होता है कहना ।

3) **अनुवाद शब्द का अर्थ** : किसी की कही हुई बात को दूबारा कहना ।

4) **अनुवाद का महत्व** : अनुवाद भानव जीवन की अत्यधिक आवश्यक प्रक्रिया है । इसी कारण अनुवाद का महत्व भी दिन-प्रति दिन बढ़ता जा रहा है ।

5) **अनुवाद के प्रकार** : अनुवाद एक बहुत बड़ी प्रक्रिया है । काव्यानुवाद, नाटकानुवाद शब्दानुवाद भावानुवाद आदि । अनुवाद के कारण विश्व में आदान-प्रदान की प्रक्रिया मजबूत होती जा रही है ।

6) **अनुवाद के गुण** : एक अनुवादक तभी सफल हो सकता है जब वह चहुमुखी प्रतिभा संपन्न हो । उसमें एक आलोचक, न्यायाधीश विश्लेषक आदि गुण होना चाहिए ।

<u>UNIT-II</u> - <u>पत्रकारिता का अर्थ, परिभाषाएँ, मूल्य, स्वरूप तथा उद्देश्य</u>

1) पत्रकारित शब्द अंग्रेजी के जर्नलिजम का हिन्दी रूपांतर है । इस का अर्थ है, दैनिकी, रोजनामा आदि ।

2) **<u>मूल्य</u>** : पत्रकारिता लोकतंत्र का चौथा स्तंभ है । पत्रकारि प्रशासन और समाज के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी की भूमिका निर्वाह करती है ।

3) **<u>पत्रकारिता का इतिहास</u>** : भारत में पत्रकारिता की शुरूआत प्रतिरोध की संस्कृति से हुई। भारतीय पत्रकारिता की जननी, हिन्दी पत्रकारित का जननी और विकास भी बंगाल की धरती में ही हुआ ।

4) **<u>पत्रकारित का महत्व</u>** : पत्रकारिता जीवन के प्रत्येक पहलू पर नजर रखती है । समाचार पत्र जनता की संसद है, जिसका अदिवेशन सदैव चलता रहता है ।

5) **<u>पत्रकारिता के प्रकार</u>** : पत्रकारिता इक्कीसवीं शताब्दी में यह एक ऐसा सशक्त विषय के रूप में उभरा है जिसकी कल्पना नही की जा सकती है । पत्रकारिता इस प्रकार के है, राजनैतिक, अपराध, खोजी, आदि ।

6) **<u>पत्रकार के गुण</u>** : मीडिया जहाँ एक ओर जनता की सशक्त आवाज बन कर उभरा है, वही वह युवाओं की पहली पंसंद भी बनता जा रहा है । पत्रकारों के निम्न प्रकार के गुण है । प्रेस विधि की जानकारी, सत्य निष्ठा, ईमानदारी आदि ।

7) **<u>भारत के प्रमुख हिन्दी समाचार पत्र</u>** : दैनिक हिन्दुस्तान यह 1932 में शुरू हुआ था। नवभारत टाइम्स आज अमर उजाला दैनिक भास्कर आदि ।

<u>UNIT-III</u> - <u>हिन्दी साहित्य के विविध आयाम</u>

1) **<u>हिन्दी में स्त्रवादी साहित्य</u>** : भारत में 20 वीं सदी को महिला जागरण का युग कहा जाता है । 1975 का वर्ष अंतरराट्रीय महिला वर्ष के रूप में संयुक्त राष्ट्र ने मनाया, सन् 1985 अंतरराष्ट्रीय महिला दशक मनाया गया । महावेदी वर्मा, राजेंद्रबाला घोष, कृष्णा सोबती आधि ।

2) <u>**हिन्दी में दलित साहित्य**</u> :

उद्भव : दलित साहित्य का जन्म पहले मराठी में हुआ है । हिन्दी में सन् 1980 के बाद हुआ है डा.बाबासाहब अम्बेड्कर के आन्दोलन के कारण दलित समाज में चेतना और स्वाभिमान जागृत हुआ ।

3) <u>**दलित कौन है?**</u> : भारत में चातुर्वर्ण्य व्यवस्था थी । इस व्यवस्था में सबसे निम्न समझनेवाली जो जातिया थी, वही दलित जातियाँ है ।

4) <u>**दलित शब्द का अर्थ**</u> : दलित का अर्थ शोषित, उत्पीड़ित तथा पद दलित स्वीकार किया गया है ।

5) <u>**दलित शब्द की परिभाषा**</u> : दलितों का अपने बारे में लिखा साहित्य ही दलित साहित्य है।

6) <u>**हिन्दी में आदिवासी साहित्य**</u> : आदिवासीय साहित्य का जन्म हिन्दी में सन् 1980 के बाद से दिखाई देता हा । आदिवासी जंगल में और पहाडों में रहते है ।

7) <u>**हिन्दी में आदिवासी साहित्य**</u> : सन् 1991 के बाद ही दिखाई देता है । आदिवासी साहित्यकार निर्मला पुतुल, रामदयाल मुंड, कुमार विनोद, हरिराम मीणा आदि है ।

8) <u>**हिन्दी में अल्पसंख्यक साहित्य**</u> : हिन्दी में अल्पसंख्यक साहित्य का उद्‌भव सन् 1970 में दिखाई देता है । जिसकी संख्या कम हो वो, अल्प संख्यक कहलाते है ।

9) <u>**हिन्दी में अल्पसंख्यक साहित्य का उद्भभ एवं विकास**</u> : हिन्दी साहित्य में अल्पसंख्यक वर्ग की वैचारिक भूमिका है । आदिकाल से ही अल्पसंख्यक वर्ग के साहित्य को देख सकते है। जैसे बौद्ध साहित्य, जैन इस्लान, सिख साहित्य के साथी ही हिन्दी में अल्प संख्यक साहित्य की शुरूआत हो चुकी है ।

10) <u>**हिन्दी में अल्पसंख्यक साहित्यकार**</u> : बदीज्जमाँ, गुलशेर, अहमम खाँ, शानी, मेहरून्निसा परवेज आदि ।